कविकुलगुरू - कालिदास - संस्कृत - विश्वविद्यालयः

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

=संघर्षःपराभवेच्छा=१

॥श्रीगणेशायनमः॥भूँसत्तायां॥उदात्तःपरस्मैभाषः॥एधंवृद्धौ॥स्पर्द्धंसंघर्षे॥गाधृंप्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रंथे
च॥बाधृंलोडने॥नाधृंनाथृंयाच्ञोपतापैश्वर्याशीःषु॥दधंधारणे॥स्कुदिँआप्रवणे॥श्विदिँश्वैत्ये॥
वदिँअभिवादनस्तुत्योः॥भदिँकल्याणेसुखेच॥मदिँस्तुतिमोदमदस्वप्नकांतिगतिषु॥स्पदिँकिंचि
गेक इत्यर्थः=४ च्चलने॥क्लिदिँपरिदेवने॥मुदंहर्षे॥ददंदाने॥ष्वदंस्वर्दंआस्वादने॥उर्दंमानेक्रीडायांच॥कुर्दंखुर्दंगु
x गुद५ र्दंगुदंक्रीडायामेव॥षूदंक्षरणे॥ह्रादंअव्यक्तेशब्दे॥ह्लादीँसुखेच॥स्वादंआस्वादने॥पर्दंकुत्सितेश चानं
ब्दे॥यतीँप्रयत्ने॥युतृंजुतृंभासने॥विथृंवेथृंयाचने॥श्रथिँशैथिल्ये॥ग्रथिँकौटिल्ये॥कत्थं १६ श्लाघा छ
यां॥एधादयउदात्ता॥अनुदात्तेतआत्मनेभाषाः॥अतंसातत्यगमने॥चितीँसंज्ञाने॥च्युतिँर्आसे अ
चने॥श्च्युतिँर्क्षरणे॥मंथंविलोड[illegible]ने॥कुथिँपुथिँलुथिँमथिँहिंसासंक्लेशनयोः॥षिधंगत्यां॥
षिधूँशास्त्रेमांगल्येच॥खादृंभक्षणे॥खदंस्थैर्येहिंसायांच॥बदंस्थैर्ये॥गदंव्यक्तायांवाचि॥रदंवि
५= एवकारोधात्वनामनेकार्थत्वेज्ञापकः॥गुदक्रीडायुदविहारःगुद इतिचकुधातुःइत्येके=५ चाद्रक्षणे=१ ५= गुदरवेद्दत्यर्थः=५ वि

ग्रासनं=१

Acc No - ~~2820~~ M1040

Title - उदात्तपरस्मैभाषा

Subject - व्याकरण।

पत्रे। - ⑥

①

KKSU LIBRARY
RAMTEK
441 106
M1040
Dist. Nagpur

Checked 2012

बिं छादने। लुबि तुबि अर्दने। चुबि वक्त्रसंयोगे। षृभु षृंभु हिंसार्थौ। षिभु षिंभु इत्येके। शुभ शुंभ भा
षणे हिंसायां च। गुपादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ घिणि घुणि घृणि ग्रहणे। घुण घूर्ण भ्र
मणे। पण व्यवहारे स्तुतौ च। पन च। भाम क्रोधे। क्षमूष् सहने। कमु कांतौ। घिण्यादय उदात्ता
अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः॥ अण रण वण भण मण कण क्वण व्रण भ्रण ध्वण शब्दार्थाः। ओ
ण अपनयने। शोण वर्णगत्योः। श्रोण संघाते। श्लोण च। पैण गतिप्रेरणश्लेषणेषु। ध्रण शब्दे। बण
धण च। कनी दीप्तिकांतिगतिषु। ष्टन वन शब्दे। वन षण संभक्तौ। अम गत्यादिषु। द्रम हम्म मीमृ
गतौ। चमु छमु जमु झमु अदने। जिमु इत्येके। क्रमु पादविक्षेपे। अयादय उदात्ता उदात्तेतः पर
स्मैभाषाः॥ अय वय पय मय चय तय णय गतौ। दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु। रय गतौ। ऊयी तंतु
संताने। पूयी विशरणे दुर्गंधे च। क्नूयी शब्दे उंदे च। क्ष्मायी विघनने। स्फायी ओप्यायी वृद्धौ। तायृ सं
तानपालनयोः। शल चलनसंवरणयोः। वल वल्ल सं वरणे संचरणे च। मल मल्ल धारणे। मल

ण५४

आदानं

२

१=भावकरणमभिप्रायसूचनं।=१

होडृ २

प्रतिघाते च। स्फुठि शोषणे। रुठि लुठि गतौ। चुड्डु भावकरणे। अडु अभियोगे। कडु कार्कश्ये। क्रीडृ विहारे।
तोडृ तोडने। तूडृ इत्येके। हुडृ ऊडृ गतौ। रौडृ अनादरे। रोडृ लोडृ उन्मादे। अडृ उद्यमे। लडृ विलासे। ल
लई प्सायां। कड मदे। कडि इत्येके। गडि वदनैकदेशे। शौटादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ तिपृ
तेपृ ष्टिपृ ष्टेपृ क्षरणार्थाः। तेपृ कंपने। ग्लेपृ दैन्ये। टुवेपृ कंपने। केपृ गेपृ ग्लेपृ च। मेपृ रेपृ लेपृ गतौ।
ल त्रपूष् लज्जायां। कपि चलने। रबि लबि अबि शब्दे। लबि अवस्रंसने। कबृ वर्णे। क्लीबृ अधार्ष्ट्ये। क्षी
बृ मदे। शीभृ कत्थने। चीभृ च। रेभृ शब्दे। [illegible] अभि रभि च। ष्टभि स्कभि प्रतिबंधे। जभी
जृभि गात्रविनामे। शल्भ कत्थने। वल्भ भोजने। गल्भ धार्ष्ट्ये। श्रंभु प्रमामादे। ष्टुभु स्तंभे। तिपादय उ
दात्ता अनुदात्तेतस्तपिवर्जमात्मनेभाषाः॥ गुपू रक्षणे। धूप संतापे। जप जल्प व्यक्तायां वाचि। जप मा
नसे च। चप सांत्वने। षप समवाये। रप लप व्यक्तायां वाचि। चुप मंदायां गतौ। तुप तुंप त्रुप त्रुंप तुफ
तुंफ त्रुफ त्रुंफ हिंसार्थाः। पर्प रफ रफि अर्ब पर्ब लर्ब बर्ब मर्ब कर्ब खर्ब गर्ब शर्ब षर्ब चर्ब गतौ। कु

२=समवायःसंबंधःसम्यगवबोधा=२
धो

॰लुंचुषस्ज गतावितिपरस्मैपदि धातुषु पठ्यते इति सङ्गतिपरस्मैपदी प्रतिभातिपरं तु माह। स्साध्यो। यदपि प्रायेषु सङ्जुं ते इत्य॰ ग्रात भाष्य॰
॰मा ण्यारुच्यमात्मनेपद्येवेति कैयटादि स्पिरूक्तमिसयमात्मनेपद्येवेति राद्धातः आत्मनेपद्यपीति केचिन्न पुनः परस्मैपद्येवेत्युक्तौ। अतएव॰
॰धातुग्र नो हेतुमति चेति सूत्रेषु यदपि प्रायेषु सज्जंते इति साध्यप्रयोगा दृष्ट॰ ॰त्मनेपद्यपि अतोस्यात्मनेपदं ५ दूषयंतो वर्धमानस्तु।॰

स्तुतंचु त्वंचु म्रुंचु ग्लुंचु ग्रुचु ग्लुचु गत्यर्थाः। ग्रुचु ग्लुचु कुजु खुजु स्तेयकरणे। ग्लुंचु षस्जं गतौ। गुजि अव्य स्पादयउ सूचौ॥=१
क्ते शद्बे। अर्च पूजायां। अचइत्येके। म्लेछ अव्यक्तो शद्बे। लछ लाछि लक्षणे। वांछि इच्छायां। आछि आयामे।
॰ समाप्तिः ४ ह्रीछ लज्जायां। हुर्छा कौटिल्ये। मूर्छा मोहसमुच्छ्राययोः। स्फूर्छा विस्तृतौ। युछ प्रमादे। उछि उंछे। उछी वि उंछः कणश॰ नं कणिशा॰ शिलमिति
वासे। ध्रज ध्रजि धृज धृजि ध्वज ध्वजि गतौ। कूज अव्यक्ते शद्बे। अर्ज षर्ज अर्जने। गर्ज शद्बे। तर्ज भर्त्स
ने। कर्ज व्यथने। खर्ज पूजने च। अज गतिक्षेपणयोः। तेज पालने। खज मंथे। खजि गतिवैकल्ये। एजृ कं
पने। टुओस्फूर्जा वज्रनिर्घोषे। क्षि क्षये। क्षीज अव्यक्ते शद्बे। लज लजि भर्जने। लाज लाजि भर्त्सने च। ला॰ ६
॰ने॰४ जज जजि युद्धे। तुज हिंसायां। गज गजि गृज गृजि मुज मुजि शद्बार्थाः। वज व्रज गतौ। क्षुवादय उदात्ता उदात्ते गजेर्दने च मे
तः क्षि वर्जं परस्मैभाषाः॥ अट्ट अतिक्रमणहिंसयोः। वेष्ट वेष्टने। चेष्ट चेष्टायां। गोष्ट लोष्ट संघाते। घट्ट च
लने। स्फुट विकसने। अठि गतौ। वठि एकचर्यायां। मठि कठि शोके। मुठि पालने। हेठ विबाधायां। एठ च। शाठ्य नि॰
हिडि गत्यनादरयोः। हुडि संघाते। कुडि दाहे। वडि विभाजने। मडि च। भडि परिभाषणे। पिडि संघाते। मुडि
एकचर्या असहायगमनं।=२ शोक इह आध्यानं=२ परिहासः सनिंदोपालंभश्च परिभाषणं=१

⑨

तकिकृछ्रजीवने।बुक्कंभषणे।कखहसने।ओखृराखृलाखृद्राखृध्राखृशोषणालमर्थयोः।शाखृ
श्लाखृव्याप्तौ।उखउखिवखवखिमखम [illegible] खिणखणखिरखरखिलखल [illegible] खिइखइ
।खिईखवत्रखवत्र।खिशि खिवरिखव वल्ग रगि लगि अगि वगि मगि तगि त्वगि श्रगि श्लगि इगि रिगि लि
गि गत्यर्थाः।त्वगि कंपने।युगि जुगि बुगि वर्जने।घघ हसने।मघि मंडने।शिघि आघ्राणे।फक्काद
यउदात्ता अनुदात्तेतः परस्मैभाषाः॥८॥वर्च दीप्तौ।षच सेचने।अयं सेवनार्थोपि।लोचृ दर्शने।शच
व्यक्तायां वाचि।श्वच श्वचि गतौ।कच बंधने।कचि काचि दीप्तिबंधनयोः।मच मुचि क [illegible] ल्कने।
मचि धारणोच्छ्रायपूजनेषु।पचि व्यक्तीकरणे।ष्टुच प्रसादे।ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु।ऋजि
भृजी भर्जने।एजृ भ्रेजृ भ्राजृ दीप्तौ।ईज गतिकुत्सनयोः॥वर्चादयउदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः॥शु
च शोके।कुच शब्दे तारे।कुंच क्रुंच गतिकौटिल्याल्पीभावयोः।लुंच अपनयने।अंचु गतिपूजनयोः।वंचु

कल्कनं दं
कथनं च

२

5

सेदनं=१

गदिः अवयवक्रियायाः कोशः।=१
मघक्तिदिअवयवे इतिकेचित्=२
गडि वदनैकदेशे।२

क्रे३=
दा४
[illegible] क्लिरोद्ध

वि खवँ ने। णद अव्यक्ते शब्दे। अर्दँ गतौ याचने च। नर्दँ गर्दँ शब्दे। तर्दँ हिंसायां। कर्दँ कुत्सिते शब्दे। खर्दँ दंदशूके। अतिँ अदिँ बंधने। इदिँ परमैश्वर्ये। बिदिँ अवयँवे। णिदिँ कुत्सायां। टुनदिँ समृद्धौ। चदिँ आह्लादने दीप्तौ च। त्रदिँ चेष्टायां। कदिँ क्रदिँ क्लदिँ आह्वाने रोदने च। क्लिदिँ परिदेवने। शुंध शुद्धौ। अतादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ शीकृँ सेचने। लोकृँ दर्शने। श्लोकृँ संघाते। द्रेकृँ ध्रेकृँ शब्दोत्साँहयोः। रेकृँ शंकायां। सेकृँ स्रेकृँ स्रकिँ श्रकिँ श्लकिँ गत्यर्थाः। शकिँ शंकायां। अकिँ लक्षणे। वकिँ कौटिल्ये। मकिँ मंडने। ककँ लौल्ये। कुकँ वृकँ आदाने। चकँ तृप्तौ प्रतीघाते च। ककिँ वकिँ श्वकिँ त्रकिँ ढौकृँ त्रौकृँ ष्वष्कँ वस्कँ मस्कँ टिकृँ टीकृँ तिकृँ तीकृँ रघिँ लघिँ गत्यर्थाः। लघिँ भोजननिवृत्तौ च। अघिँ वघिँ मघिँ गत्याक्षेपे। मघिँ कैतवे च। राघृँ लाघृँ द्राघृँ सामर्थ्ये। द्राघृँ आयामे च। श्लाघृँ कत्थने। शीकादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः॥ फक्कँ नीचैर्गतौ। तकँ हसने।

आक्षेपो निंदा=२ लौल्यं गर्वश्चापलं च=४ नीचैर्गतिर्मंदगमनमसद्व्यवहारश्च।=१
गतौ गत्यारंभे चेत्यन्ये=२

द...
यांक्रि
ष्टः।

संघातः
[illegible]
[illegible]

K K S U LIBRARY
RAMTEK
441 106
M1040
Dist Nagpur

```
[OrderDescription]
,CREATED=21.10.20 10:24
,TRANSFERRED=2020/10/21 at 10:26:01
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0004266
,Book Name=M-1040-UDATPAR SMAIBHASHA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,
```